तंत्र शक्ति

सदुपयोग और दुरुपयोग : आध्यात्मिक विवेचन

तंत्र : बाधा नहीं, मुक्ति का मार्ग

तंत्र भारतीय आध्यात्मिक विज्ञान परम्परा का एक दिव्य विज्ञान है, जो भगवान शिव और आदिशक्ति के आशीर्वाद से मानव कल्याण हेतु प्रकट हुआ।

तंत्र का उद्देश्य चेतना का विकास, शक्ति का जागरण और जीवन को उच्चता प्रदान करना है। किन्तु जब इस दिव्य शक्ति का उपयोग स्वार्थ, ईर्ष्या अथवा किसी के जीवन में अवरोध उत्पन्न करने के लिए किया जाता है, तब वशीकरण, कीलन जैसी तांत्रिक बाधाएं जन्म लेती हैं।

साधक तंत्र का प्रयोग किसी को कष्ट पहुंचाने के लिए नहीं करते, बल्कि शिव-शक्ति की कृपा से ऐसी बाधाओं का निवारण कर लोककल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

यह लेख तंत्र के वास्तविक स्वरूप, उसके सदुपयोग-दुरुपयोग तथा तांत्रिक अवरोधों से मुक्ति के आध्यात्मिक उपायों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है।

तंत्र एक अत्यन्त ही गूढ़, वैज्ञानिक और दिव्य वैज्ञानिक साधना पद्धति है। वर्तमान में तंत्र शब्द को लेकर समाज में अनेक भ्रांतियां हैं। साधारण जानकारी वाले लोग तंत्र को केवल जादू-टोना, वशीकरण, उच्चाटन, कीलन अथवा किसी को कष्ट पहुंचाने वाली क्रिया के रूप में देखते हैं, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल भिन्न है। **तंत्र का मूल स्वरूप शिव और शक्ति की उपासना पर आधारित एक दिव्य विज्ञान है, जिसका उद्देश्य मानव जीवन को उच्चता, सामर्थ्य, जागृति और मुक्ति प्रदान करना है।**

तंत्र का प्रकटीकरण स्वयं भगवान शिव से माना गया है। शिव ने आदिशक्ति पार्वती को जो दिव्य ज्ञान प्रदान किया, वही आगे चलकर तंत्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसीलिए तंत्र को शिव-शक्ति संवाद का विज्ञान भी कहा जाता है। इसमें जीवन की समस्याओं का समाधान, शक्ति का संतुलन और साधक की चेतना को ऊंचा उठाने की क्षमता निहित है।

तंत्र स्वयं में पूर्ण विज्ञान है, शक्ति है, एक प्रणाली है, एक विधान है। जैसे अग्नि भोजन भी पका सकती है और घर भी जला सकती है, वैसे ही तंत्र का उपयोग साधक की भावना और उद्देश्य के अनुसार होता है। यदि तंत्र का प्रयोग आत्मविकास, लोककल्याण और आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाए तो वह वरदान बन जाता है, और यदि उसका प्रयोग स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष या किसी को कष्ट देने के लिए किया जाए तो वही तंत्र विनाशकारी परिणाम भी उत्पन्न कर सकता है।

तंत्र के क्षेत्र में शरीर सर्वोपरि है। इस जीवन में समस्त रस, सारे सुख तन के द्वारा ही अनुभव किए जाते हैं। जब आप समस्याओं से घिरते हैं, गुप्त शत्रु आपको त्रास देते हैं, आर्थिक कष्ट झेलते हैं, बने हुए कार्य बिगड़ने का संताप झेलते हैं, उस क्षण आप जो व्यथा, परेशानी अनुभव करते हैं, वे उतनी ही सच्ची हैं, जितना आपका अस्तित्व और यह व्यथा तन+मन दोनों को कष्ट देती है।

सिद्ध साधक तंत्र का प्रयोग किसी के जीवन में बाधा उत्पन्न करने के लिए नहीं करते। उनका उद्देश्य सदैव संरक्षण, भौतिक उन्नति, सफलता, कल्याण और आध्यात्मिक उत्थान होता है। वे तंत्र की शक्ति का उपयोग रोग, भय, ग्रहबाधा, नकारात्मकता और जीवन के अवरोधों को दूर करने के लिए करते हैं।

तंत्र का सर्वोच्च उद्देश्य मनुष्य को बंधनों से मुक्त करना है, न कि उसे किसी नए बंधन में जकड़ना।

तंत्र का विशुद्ध स्वरूप –

तंत्र वह व्यवस्था है जो चेतना का विस्तार करे, शक्ति का विस्तार करे और जीवन को सीमाओं से निकालकर अनंत संभावनाओं की ओर ले जाए।

तंत्र एक सम्पूर्ण प्रणाली है जिसमें मंत्र, यंत्र, ध्यान, साधना, ऊर्जा-संतुलन, देवता-उपासना, चक्र-जागरण, प्राणशक्ति और आत्मबोध सम्मिलित हैं। तंत्र का उद्देश्य मनुष्य को उसकी सुप्त शक्तियों से परिचित कराना है।

तंत्र का दुरुपयोग

दुर्भाग्यवश कुछ लोग तंत्र की शक्तियों का उपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए करने लगते हैं। जब साधना का उद्देश्य स्वयं की उन्नति न होकर किसी अन्य व्यक्ति को प्रभावित करना, नियंत्रित करना या हानि पहुंचाना बन जाता है, तब तंत्र का दुरुपयोग प्रारम्भ हो जाता है।

जबकि तंत्र शास्त्रों में स्पष्ट है कि जो शक्ति दूसरों को कष्ट देने के लिए प्रयुक्त होती है, उसका प्रतिफल किसी न किसी रूप में कर्ता को भोगना ही पड़ता है। इसलिए उच्चकोटि के तांत्रिक और सिद्ध साधक कभी भी ऐसी क्रियाओं में प्रवृत्त नहीं होते।

तांत्रिक बाधाएं क्या हैं?

जब किसी व्यक्ति के जीवन में बिना किसी स्पष्ट कारण के लगातार अवरोध उत्पन्न होने लगें, निर्णय क्षमता कमजोर हो जाए, मानसिक भ्रम बढ़ जाए, कार्य बार-बार असफल होने लगें, परिवार में अनावश्यक कलह होने लगे अथवा व्यक्ति की ऊर्जा लगातार गिरती चली जाए, तब आध्यात्मिक दृष्टि से इसे तांत्रिक बाधाओं की श्रेणी में भी देखा जाता है।

तांत्रिक बाधाएं अनेक प्रकार की हो सकती हैं, किन्तु उनमें दो प्रमुख बाधाएं मानी गई हैं –

1. वशीकरण 2. कीलन

आध्यात्मिक दृष्टि से सबसे बड़ा वशीकरण अपने मन का वशीकरण है। जिसने अपने मन, इन्द्रियों, वासनाओं और अहंकार को वश में कर लिया, वही वास्तविक वशीकरण का अधिकारी है।

किन्तु जब इस शक्ति का उपयोग किसी अन्य व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा को प्रभावित करने के लिए किया जाता है, तब यह अनुचित दिशा में चला जाता है।

वशीकरण का प्रभाव

- ❐ वशीकरण के कारण व्यक्ति निर्णय लेने में भ्रमित हो सकता है।
- ❐ गलत लोगों के प्रभाव में आ सकता है।
- ❐ अपने वास्तविक लक्ष्यों से भटक सकता है।
- ❐ परिवार और शुभचिंतकों से दूरी बना सकता है।
- ❐ मानसिक अस्थिरता अनुभव कर सकता है।
- ❐ जीवन की दिशा खो सकता है।
- ❐ वशीकरण का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना कमजोर होने लगती है। उसकी ऊर्जा का प्रवाह बाधित हो जाता है और वह अपने वास्तविक सामर्थ्य का उपयोग नहीं कर पाता।

कीलन तंत्र क्रिया

तांत्रिक बाधाओं में दूसरा प्रमुख प्रकार है कीलन। 'कील' का अर्थ होता है किसी वस्तु को स्थिर कर देना। आध्यात्मिक अर्थ में कीलन का तात्पर्य है किसी व्यक्ति की प्रगति, ऊर्जा, प्रतिभा या कार्यक्षमता को बांध देना।

ऐसे व्यक्ति में योग्यता होने के बावजूद सफलता नहीं आती। अवसर सामने आते हैं लेकिन अंतिम क्षण में छूट जाते हैं। परिश्रम करने के बाद भी परिणाम नहीं मिलते।

कीलन के प्रभाव

- ❐ कीलन के प्रभाव से कार्यों में बार-बार विघ्न आते हैं।
- ❐ आर्थिक प्रगति रुक सकती है।
- ❐ व्यापार में अचानक अवरोध आ सकते हैं।
- ❐ शिक्षा और करियर में रुकावटें उत्पन्न हो सकती हैं।
- ❐ व्यक्ति की ऊर्जा क्षीण हो सकती है।
- ❐ आध्यात्मिक साधना में बाधाएँ आ सकती हैं।
- ❐ यह ऐसा है जैसे किसी नदी के प्रवाह पर बांध बना

दिया जाए। नदी का जल समाप्त नहीं होता, पर उसका प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है।

शिव और शक्ति की कृपा किसी भी नकारात्मक शक्ति से अधिक प्रबल है। इसलिए वह प्रतिशोध नहीं लेता, बल्कि अपने आध्यात्मिक बल को बढ़ाता है। भगवान शिव को तंत्र का आदि गुरु कहा गया है। समस्त तंत्र शास्त्र का उद्गम शिव से माना जाता है।

जहां शिव चेतना हैं, वहीं शक्ति क्रिया हैं। शक्ति के बिना कोई भी साधना पूर्ण नहीं होती। जब साधक शक्ति की शरण में जाता है, तब उसके भीतर आत्मबल, साहस और तेज का विकास होता है। नकारात्मक प्रभाव उसके निकट टिक नहीं पाते।

शक्ति उपासना का मूल उद्देश्य किसी को हराना नहीं, बल्कि स्वयं को इतना सशक्त बनाना है कि कोई नकारात्म कता प्रभावित न कर सके।

तांत्रिक बाधाओं का सर्वोत्तम समाधान -

❒ नियमित साधना, ❒ गुरु कृपा, ❒ शिव उपासना, ❒ शक्ति साधना, ❒ मंत्र जप और ❒ सकारात्मक चिंतन

जब साधक अपनी ऊर्जा को ऊँचा उठाता है, तब निम्न स्तर की बाधाएं स्वतः समाप्त होने लगती हैं।

तांत्रिक बाधाओं से रक्षा में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। गुरु साधक को अपनी चेतना से जोड़ते हैं। गुरु का आशीर्वाद एक अदृश्य कवच की भांति कार्य करता है।

जब साधक गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण रखता है, तब अनेक प्रकार की बाधाएं उसके निकट आने से पहले ही समाप्त हो जाती हैं। गुरु की कृपा वह अग्नि है जो नकारात्मक संस्कारों, भय और बाधाओं को भस्म कर देती है।

तंत्र शिव और शक्ति का दिव्य विज्ञान है, जो मनुष्य को शक्तिशाली, जाग्रत और मुक्त बनाने के लिए प्रकट हुआ है। इसका मूल उद्देश्य जीवन को उच्चता प्रदान करना है, न कि किसी को कष्ट देना।

वशीकरण और कीलन जैसी तांत्रिक बाधाओं का उल्लेख परम्पराओं में मिलता है, किन्तु जब इसका प्रभाव आपके जीवन पर पड़ता है तो जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है, उस स्थिति में शिव की कृपा, शक्ति की उपासना, गुरु का संरक्षण और नियमित साधना किसी भी नकारात्मक प्रभाव को समाप्त कर सकती है।

तंत्र का वास्तविक स्वरूप विनाश नहीं, बल्कि संरक्षण है; बंधन नहीं, बल्कि मुक्ति है; अंधकार नहीं, बल्कि चेतना का प्रकाश है।

जब साधक शिव और शक्ति के चरणों में समर्पित होकर गुरु के आदेश अनुसार साधना करता है, तब उसके जीवन में ऐसी दिव्य ऊर्जा प्रवाहित होती है कि वशीकरण, कीलन और अन्य सभी प्रकार की बाधाएं स्वयं ही क्षीण होकर सम ाप्त हो जाती हैं। यही तंत्र का वास्तविक रहस्य और उसका परम कल्याणकारी स्वरूप है।

गुरु कृपा स्वरूप ही सूर्य ग्रहण (रात्रि 9 बजे से रात्रि 1 बजे) और हरियाली अमावस्या के सिद्ध मुहूर्त में तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना का प्रकाशन किया जा रहा है।

जिस साधना को सम्पन्न कर गलत उद्देश्य के आपके या आपके परिवार पर की गई तंत्र विद्याओं को आप समाप्त कर अपने लिये एक ऐसा सुरक्षा चक्र तैयार कर सकते है जो किसी भी प्रकार की तंत्र बाधाओं को समाप्त कर सकते है।

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना से साधक तंत्र सिद्धि के मार्ग में स्वयं को निरन्तर उच्च गति देता है।